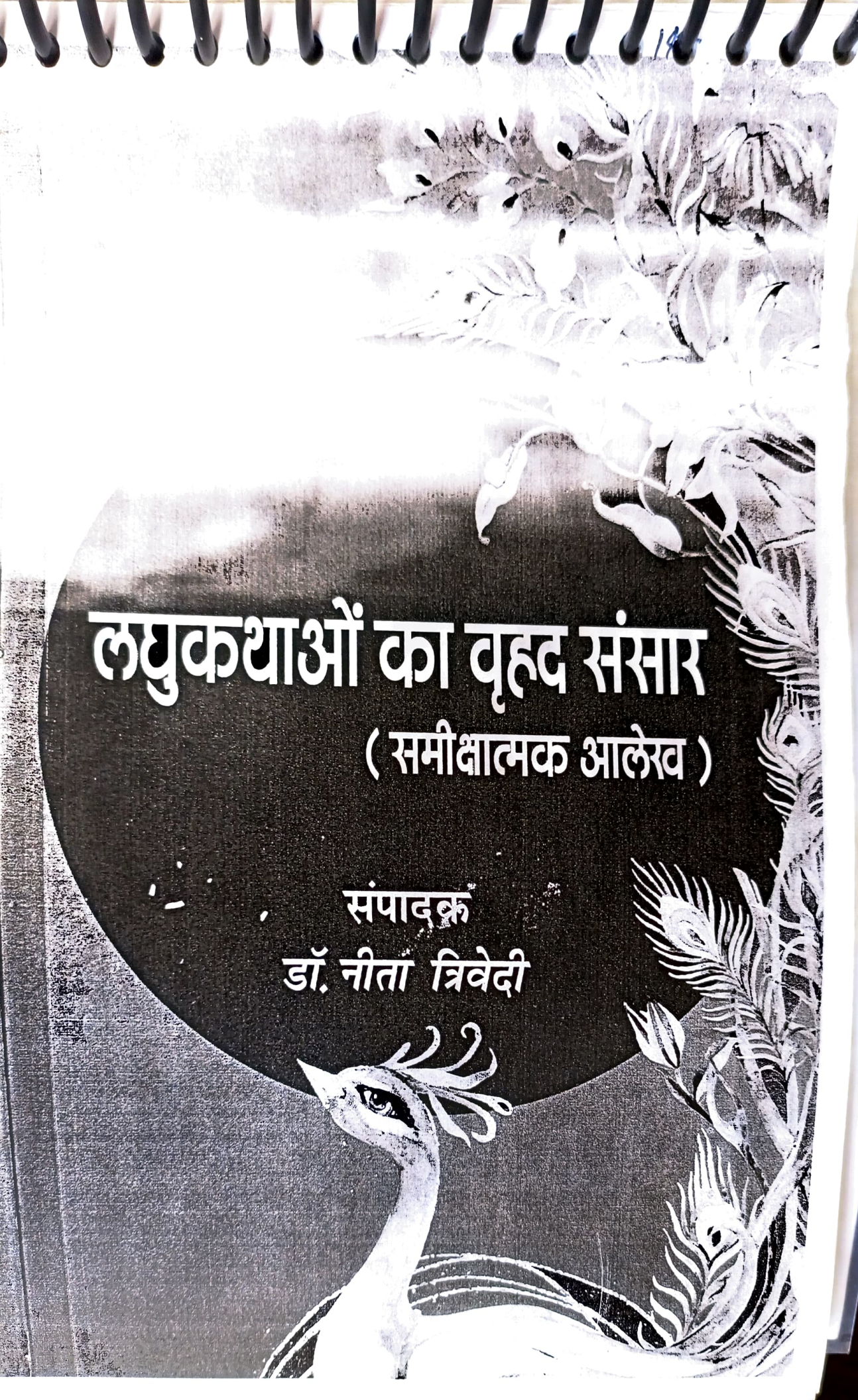
लघुकथाओं का वृहद संसार
(समीक्षात्मक आलेख)
संपादक
डॉ. नीता त्रिवेदी

अनुक्रम

1. खड़ी बोली का कथा—गद्य और लघुकथा का पुनर्प्रस्फुटन
—डॉ. बलराम अग्रवाल 11

2. मुट्ठी भर आसमान के लिए : लघुकथा में स्त्री विमर्श—
भगीरथ परिहार 22

3. लघुकथा : संश्लिष्ट सृजन-प्रक्रिया—*डॉ. कमल चोपड़ा* 28

4. आधुनिक हिंदी लघुकथा की अवधारणा, विकास एवं परिभाषा
—डॉ. रामकुमार घोटड़ 44

5. लघुकथाओं में प्रतिबिम्बित मानवीय संवेदनाएँ—*डॉ. नीतू परिहार* 60

6. संवेदनाओं की सुगन्ध से महकती लघुकथाएँ—*डॉ. नवीन नन्दवाना* 69

7. लघुकथा की भूमिका और माधव नागदा की संवेदना
—डॉ.आशीष सिसोदिया 79

8. लघुकथा साहित्य : कुछ विचार-बिन्दु—*डॉ. कुलवन्त सिंह* 88

9. व्यवस्था की विसंगतियों की धारदार अभिव्यंजना :
असगर वजाहत की लघुकथाएँ—*डॉ. प्रीति भट्ट* 96

10. सामाजिक सरोकारों का आईना : बोनसाई—*डॉ. नीता त्रिवेदी* 104

11. घाव करे गम्भीर : सामाजिक विसंगतियों को अभिव्यक्त
करती लघुकथाएँ—*डॉ. ममता पानेरी* 114

12. पद्मजा शर्मा की लघुकथाओं में मानवीय संवेदना—*डॉ. उषा शर्मा* 121

13. संवेदना और सामाजिक समरसता से जुड़ी लघुकथाएँ :
फूलों वाली दूब—*डॉ. शगुफ्ता सैफी* 128

14. लघुकथाकार गोपी भैया कहिन (उवाच)—*शेख शहजाद उस्मानी* 136

15. लघुकथा : हास्य एवं व्यंग्य—*रोहित बंसल* 145

16. हिंदी के लघुकथाकार एवं उनकी विशाल कथादृष्टि—*बबीता गुप्ता* 151

17. हिंदी लघुकथा : लघु कलेवर में व्याप्त गुरुत्तर वैश्विक मूल्य —
डॉ. ज्योत्सना स्वर्णकार 155

18. हिंदी लघुकथा : परिचय, स्वरूप और परिदृश्य—
तरुण पालीवाल, शोधार्थी 162

5

लघुकथाओं में प्रतिबिम्बित मानवीय संवेदनाएँ

—डॉ. नीतू परिहार
सह आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय
उदयपुर (राज०)

लघुकथा साहित्य की वह गद्य-विधा है जिसमें बहुआयामी मानव-जीवन के किसी एक पक्ष का सहज, स्वभाविक एवं प्रभावी रूप व्यक्त होता है। आकार की लघुता, लघुकथा की अनिवार्य शर्त है। लघुकथा का फलक छोटा होता है, किन्तु छोटा आकार कथा की संवेदना को सीमित नहीं करता। लघुकथा के लिए भूमिका का स्थान नहीं होता लेखक सीधे विषय पर आता है। लघुकथा में यह विशेषता रहती है कि वह कम शब्दों में अधिक बात कहती है। बिहारी के दोहों के समान 'देखन में छोटे लागे, घाव करे गम्भीर' । वरिष्ठ साहित्यकार कमल किशोर गोयनका ने लघुकथा को परिभाषित करते हुए कहा है—''लघु का अर्थ यह है कि वह कहानी की तुलना में निश्चित ही ऐसी विधा है जिसका आकार लघु है और लघु आकार के लिए उसकी कथा का लघु होना अनिवार्य है क्योंकि कथा की लघुता ही प्रमुख रूप से 'लघुकथा' की एक विशिष्ट कथागत विधा का स्वरूप प्रदान करती है।''[1]

लघुकथा अपनी बात को बहुत छोटे से में कहने का सशक्त माध्यम है। आज के व्यस्तमय जीवन में लघुकथा के पाठकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है, कारण कम समय में लघुकथा का पढ़ा जा पाना। आज के समय में लघुकथा